INSTITUTE FOR INTEGRATED TRANSITIONS

IFIT परिचर्चा पेपर

मई 2023

प्रथम सिद्धांत: ध्रुवीकरण के बुनियादी सिद्धांतों पर अत्यधिक सहमति की आवश्यकता

ध्रुवीकरण के खतरों के बारे में वैश्विक स्तर पर चर्चा होती है। मगर जब तक इसके न्यूनतम परिभाषित लक्षणों पर अधिक सहमति नहीं बनती, तब तक समाज व राजनीतिक प्रणालियों के ध्रुवीकरण के लिए बेहद जरूरी समाधान अस्थायी, आधा अधूरा और अविकसित स्थिति में बने रहेंगे।

IFIT के संस्थापक एवं कार्यकारी निदेशक, मार्क फ्रीमैन द्वारा

वर्ष 1939 में, विंस्टन चर्चिल ने रूस के राजनीतिक इरादों को "रहस्य में लिपटी, एक रहस्य के अंदर, एक पहेली" के रूप में बताया था। वर्ष 2023 में, इसी वाक्यांश को हमारी सामूहिक समझ में धुवीकरण कहते है।

यह विषय निश्चित रूप से जटिल है। मगर समय आ गया है कि इस विषय की कई अस्पष्टताओं के साथ अधिक निर्णायक रूप से संघर्ष करना होगा और ध्रुवीकरण की अधिक साझा मौलिक समझ की ओर आगे बढ़ना होगा। इससे पर्याप्त फ़ायदा मिल सकता है, जिससे ध्रुवीकरण के स्थान-आधारित कारणों एवं अभिलक्षणों का निदान करने, प्रबल शुरुआती चेतावनी व प्रतिक्रिया रणनीतियों को विकसित करने, उपायों के प्रभाव का अधिक सटीक रूप से आकलन करने और संभावित सहयोगियों का निरादर करने से बचने की अनुमति मिलती है, जो शब्द के कुछ निश्चित उपयोगों को सही रूप से अस्वीकार कर देते हैं।

उस दिशा में एक व्यावहारिक कदम के तौर पर, इस परिचर्चा पत्र के तीन प्रमुख हिस्से हैं। पहला विचारों के स्तर पर ध्यान केंद्रित करता है, ध्रुवीकरण की हमारी समझ में लगातार विरोधाभासों की पड़ताल करता है और एक "हॉलमार्क" परिभाषा प्रस्तुत करता है, जो भविष्य के आधार को सुगम बना सकता है। दूसरा हिस्सा विध्रुवीकरण प्रथा के वैश्विक सर्वेक्षण व IFIT के खुद के क्षेत्रीय कार्य पर आधारित एक सांकेतिक समाधान स्पेक्ट्रम निर्मित करता है, जो मुख्यत: हॉलमार्क परिभाषा के संगत होता है। तीसरा हिस्सा संक्षेप में ध्रुवीकरण पर सहयोगात्मक रूप से काम करने वाले विद्वानों और प्रैक्टिशनरों के किसी भी संगठित वैश्विक नेटवर्क के न होने के प्रभाव की पड़ताल करता है, और यह प्रदर्शित करता है कि ध्रुवीकरण के "क्षेत्र" के उभरने का क्या अर्थ हो सकता है।

वैसे तो ध्रुवीकरण की समस्या का गृहयुद्ध, अधिनायकवाद, नरसंहार और ऐसी अन्य बुराइयों से मुकाबला नहीं किया जा सकता है, पर अगर इसकी अनदेखी की जाए, तो यह उनके लिए अग्रदूत और गति प्रेरक साबित हो सकता है। आप इसे **हाइपर**-प्रॉब्लम कह सकता है: यानी समस्या का ऐसा किस्म जो हर दूसरी समस्या के समाधान को कठिन बना दे। अस्पष्ट तरीके और वृद्धिशील रूप से, ध्रुवीकरण हर चीज को – एक सहिष्णु समाज के आदर्श से लेकर, सामान्य राजनीति व कानून बनाने के कार्य, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और बुनियादी स्वतंत्रता की संभावनाओं तक को खतरे में डाल सकता है।

भाग एक: ध्रुवीकरण की अवधारणा बनाना

इस पेपर का पहला भाग ध्रुवीकरण को समझने के तरीके में अस्पष्टताओं की एक श्रृंखला पेश करता है, अस्पष्टताओं से निपटने के करने के तरीकों पर चर्चा करता है, तथा ध्रुवीकरण की एक परिभाषा प्रस्तुत करता है, जो इसके मूल लक्षणों पर केंद्रित होता है।

1. पारभिाषकि अस्पष्टताएं

IFIT तथा फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन के ध्रुवीकरण पर वैश्विक पहल के प्रथम अठारह महीनों में किए गए शोध, साक्षात्कार और सम्मेलनों में, छह वैचारिक असहमतियां और अस्पष्टताएं बार-बार उभर कर सामने आईं। इनका वर्णन करने में, उद्देश्य कुछ निश्चित पेंचीदगियों को रेखांकित करना है, जिन्हें ध्रुवीकरण से निपटने, उसे रोकने उसका आकलन करने के लिए ज़रूरी है।

अस्पष्टताएं आश्चर्यजनक रूप से सरल होती हैं, पर वे आसानी से नजरअंदाज कर दी जाती हैं, मुख्य रूप से ध्रुवीकरण शब्द से नियमित रूप से जुड़े उचित विशेषणों की प्रचुरता के कारण (उदाहरण के लिए, उत्तेजक, वैचारिक, सममित, असममित, राजनैतिक, सामाजिक, जातीय, धार्मिक, नस्लीय, अभिजात वर्ग, जन, हानिकारक, विषैला, सौम्य इत्यादि)।

स्थायी बनाम क्षणकि

क्या ध्रुवीकरण एक ऐसी घटना है जो सामने आती होती है और गायब हो जाती है, जिसका अर्थ यह है कि समाज व राजनीतिक प्रणालियों का ध्रुवीकरण बंद हो सकता है? या क्या यह स्थायी है, जिसका अर्थ है कि समाज और राजनीतिक प्रणालियां सदैव कुछ सीमा तक ध्रुवीकृत होती हैं? आप यह सोचेंगे कि इस मूल सवाल को बहुत पहले ही हल कर लिया गया था, पर अब तक ऐसा नहीं हुआ। विशेषज्ञों के एक बड़े वर्ग के लिए, ध्रुवीकरण एक ऐसी अवस्था है, जिसमें प्रवेश किया जा सकता है और बाहर निकला जा सकता है। वहीं दूसरे के लिए – इंडेक्सिंग और ध्रुवीकरण के मापन पर तुलनात्मक काम करने वाले लेखकों समेत – यह एक ऐसी घटना है जो तेज या कम हो सकती है, मगर संघर्ष की तरह, कभी इससे बचा नहीं जा सकता है।

नकारात्मक बनाम सकारात्मक

दूसरी अस्पष्टता, जो कुछ हद तक पहले से जुड़ी हुई है, यह बताती है कि क्या ध्रुवीकरण सदैव समाज व राजनैतिक प्रणालियों के लिए नकारात्मक होता है या कभी-कभी यह "हानिहीन" हो सकता है। पहले नज़रिये के हिमायतियों का यह तर्क है कि ध्रुवीकरण स्वाभाविक रूप से एक ऐसी अवस्था है, जिसे रोका जाना या जिसका मुकाबला किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, कई ऐसे लोग हैं, जो ध्रुवीकरण को सहनीय या निष्पक्ष मानते हैं, और चिंता की वजह केवल तभी होती है, जब यह एक निश्चित सीमा पार कर जाता है और "नुकसानदेह", "गंभीर" या "जहरीला" बन जाता है। सोचने का एक और तरीका यह है कि ध्रुवीकरण पूरी तरह से सकारात्मक है, जैसा कि सॉल एलिन्स्की की प्रगतिशील लोगों को दी गई सलाह में पता चलता है कि "संगठित होने के लिए, आपको पहले ध्रुवीकरण करना होगा"। इसका आइडिया यह है कि श्रेष्ठ कार्यों के लिए, जिसमें बड़े पैमाने पर सहयोगियों को जुटाना पड़ता है, ध्रुवीकरण को बढ़ावा देना बेहद अहम होता है। यह कम स्पष्ट है कि क्या एलिंस्की के कथन के हिमायती जब कारण को अमान्य मानते हैं, तो उसी रणनीति (और परिणामों) का समर्थन करते हैं या नहीं।

द्विध्रुवीय बनाम बहुध्रुवीय

समाजों व राजनैतिक प्रणालियों के ध्रुवीकरण की बहस में एक और विचित्र अस्पष्टता उतनी ही प्राथमिक चीज़ पर केंद्रित है: क्या ध्रुवीकरण सदैव द्विध्रुवीय होता है या यह बहुध्रुवीय हो सकता है। ख़ासतौर से एक द्विध्रुवी फ़्रेमिंग – जो अक्सर अंतर्निहित तो होती है, पर स्पष्ट नहीं होती है – यह मानती है कि ध्रुवीकरण केवल दो ध्रुवों या अक्षों के बीच उत्पन्न होता है, जैसा कि इस शब्द की वैज्ञानिक उत्पत्ति बताती है। इसके विपरीत, एक बहुध्रुवीय फ़्रेमिंग – एक

दृष्टिकोण जो कमजोर देशों और ध्रुवीकरण के "जातीय" रूपों से अधिक जुड़ा होता है – यह मानता है कि ध्रुवीकरण कई अक्षों पर उत्पन्न हो सकता है। यह आश्चर्य की बात है कि ऐसा बुनियादी बिंदु पूर्व से ही स्पष्ट और व्यापक विशेषज्ञ सहमति का विषय नहीं है।

क्षैतिज बनाम लंबवत

नोट की चौथी अस्पष्टता ध्रुवीकरण की दिशा और, उसी के परिणामस्वरूप, "ध्रुवों" की स्थिति और उसकी तुलनात्मक शक्ति से जुड़ी होती है। अधिकतर शिक्षाविदों और प्रैक्टिशनरों के लिए, ध्रुवीकरण एक ऐसी गतिशीलता का संकेत करता है, जो मुख्य रूप क्षैतिज और केंद्र से दूर जाने वाली होती है, जिसमें तुलनीय आकार या बल के ध्रुवों के बीच दरार बढ़ती है। फिर भी, ध्रुवीकरण का इस्तेमाल कभी-कभी लंबवत व असममित गतिशीलता का व्याख्या करने के लिए भी किया जाता है, जिसमें एक ताकतवर पक्ष (जैसे, एक बहुसंख्यक सामाजिक समूह या एक तानाशाही केंद्र सरकार) सक्रिय रूप से शत्रुतापूर्ण दिखता है और यह तुलनात्मक रूप से छोटे और कम शत्रुतापूर्ण पक्ष पर हावी हो जाता है।

तर्कसंगत बनाम भावनात्मक

साहित्य एवं व्यवहार में अस्पष्टता का पांचवां क्षेत्र यह बताता है कि क्या ध्रुवीकरण एक ऐसी अवस्था है, जिसमें "प्रभाव" (यानी, भावना) वैकल्पिक धारणाओं व विरोधाभासी तथ्यों को लेकर मनाने के लिए व्यक्तिगत और समूह के खुलेपन को मजबूत करता या कमजोर बना देता है। कुछ लोगों के लिए, प्रभाव इस अवधारणा का सहज हिस्सा है (अर्थात, ध्रुवीकृत लोग भावनाओं से ज्यादा संचालित होते हैं)। वहीं अन्य के लिए, ध्रुवीकरण एक ऐसा लेबल है, जिसका प्रयोग उन अंतर-समूह विवादों का वर्णन करने के लिए भी किया जा सकता है, जो द्वेषपूर्ण होते हुए भी मूलतः विचार-आधारित होते हैं। शांति लाने के लिए कार्य करने वाले लोग ऐसे विवादों को टकराव का "स्वस्थ" रूप कहेंगे।

बड़ा बनाम छोटा

ध्रुवीकरण को लेकर छठी अस्पष्टता उस न्यूनतम पैमाने से जुड़ी है, जिस पर यह शब्द समाजों और राजनीतिक प्रणालियों में समस्याओं के नामकरण के लिए सही है। ज्यादातर इस शब्द का प्रयोग उन विभाजनों के लिए किया जाता है, जिन्होंने पर्याप्त सामाजिक व राजनैतिक पैमाना हासिल कर लिया है और एक सार्वजनिक चिंता का एक बड़ा विषय बन गए हैं। तब भी, कुछ ऐसे लोग हैं जो स्थानीय समूहों या कारणों के बीच ख़ास विवादों का वर्णन करने के लिए ध्रुवीकरण का इस्तेमाल करते हैं, भले ही उनके पास मैक्रो-लेवल ड्राइवर्स या प्रभाव न हों। इस अस्पष्टता में से कुछ उस अनौपचारिक रूप के कारण हो सकता है जिसमें क्रिया "ध्रुवीकरण" को संज्ञा "ध्रुवीकरण" के समान देखा जाता है, जैसे कि ध्रुवीकरण वाले बयानों या कार्यों को ध्रुवीकरण की स्थिति के अस्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए लिया जाता है, भले ही वे केवल थोड़ी-बहुत झड़पें हों।

ध्रुवीकरण को समझने के तरीके में मौजूद छह प्रमुख अस्पष्टताएं

1. स्थायी बनाम क्षणिक
2. नकारात्मक बनाम सकारात्मक
3. द्विध्रुवीय बनाम बहुध्रुवीय
4. क्षैतिज बनाम लंबवत
5. तर्कसंगत बनाम भावनात्मक
6. बड़ा बनाम छोटा

2. अस्पष्टताओं को दूर करना

यदि ध्रुवीकरण से कोई खतरा न हो, तो इसकी परिभाषा के आधार पर अस्पष्टताएं कोई चिंता की बात नहीं होंगी। हम शांति से बहस कर सकते हैं या उन्हें नज़रअंदाज कर सकते हैं। तब भी, ध्रुवीकरण बहुत अधिक विविधतापूर्ण समाजों एवं राजनैतिक प्रणालियों के कई समूहों के लिए दिनो-दिन बढ़ती चिंता का विषय है। ध्रुवीकरण के बारे में विश्व स्तर पर बहुत कुछ लिखा जा रहा है, और यह इतनी तेजी से फैल रहा है कि इससे दूसरे तरीके से निपटा नहीं जा सकता।

तब भी, ध्रुवीकरण को पहचानने, उसे रोकने, उसका मुकाबला करने और उसके मापन में अधिक प्रभावी बनने के लिए, हम इस शब्द को कैसे समझते हैं और कैसे इसका उपयोग करते हैं, उसमें अधिक सटीकता लाना होगा। ख़ासतौर से, ध्रुवीकरण के न्यूनतम लक्षणों के बारे में धीरे-धीरे अधिक आम सहमति बनाने के लिए एक सोद्देश्य प्रयास करने और प्रचलन में मौजूद उचित विशेषणों की बड़ी तादाद पर एक महत्वपूर्ण विवेचना करने की आवश्यकता है, जो परिभाषिक स्पष्टता को सुगम करने की बजाय उसे जटिल बना डालते हैं।

एक चिंतन प्रयोग के रूप में, "संप्रदायवाद" जैसे समरूपी शब्द में धुंधलापन न होने पर विचार करें। ध्रुवीकरण के विपरीत, इस बारे में कोई अस्पष्टता नहीं है कि संप्रदायवाद समाज और राजनीतिक प्रणालियों के लिए नकारात्मक होता है या सकारात्मक; यह हरेक परिभाषा में एक ही स्पष्ट संकेत नकारात्मक होने (या जहरीला होने) का मिलता है। मूल शब्द "सांप्रदायिक" से यह भी साफ हो जाता है कि संप्रदायवाद तर्क के ऊपर भावना के प्रभाव को दिखाता है ("संकीर्ण-दिमाग वाला लगाव": ऑक्सफ़ोर्ड)। मूल शब्द "संप्रदाय" पर आधारित एक न्यूनतम पैमाना भी परिलक्षित है, जो एक समूह का यूनिट साइज़ है, जो महत्वपूर्ण समूह को प्रदर्शित करता है।

इससे यह पता चलता है कि संप्रदायवाद एक विचार है, जो विचार बनाने और परिभाषा गढ़ने की परिपक्वता तक पहुंच गई है। सांप्रदायिकता के साथ, "जहरीले" और "प्रभावशाली" जैसे विशेषण निरर्थक हैं। जब हम इस शब्द का प्रयोग करते हैं, तो एक बेसलाइन समझ पैदा होती है, जो सभी के लिए स्पष्ट होती है। कोई भी उपयुक्त विशेषण जिसे हम शामिल कर सकते हैं ("राजनैतिक, जातीय या धार्मिक": ऑक्सफ़ोर्ड) वे अंतर्निहित अस्पष्टता को मजबूत करने या नई अस्पष्टता को प्रस्तुत करने की बजाय केवल आधारभूत शब्द में और अधिक स्पष्टता या सटीकता लाने का प्रयास करता है।

इसके विपरीत, ध्रुवीकरण के साथ, हम अभी भी वैचारिक विकास के शुरुआती दौर में ही हैं। हम इसे कई चीज़ों के रूप में मानने की अनुमति दे रहे हैं: जैसे कि सकारात्मक और नकारात्मक; तर्कसंगत और भावनात्मक; क्षैतिज व लंबवत; सूक्ष्म व स्थूल; इत्यादि।

इस तरह की विस्तृत अस्पष्टताएं, यदि कायम रहने दी जाएं, तो वे फ़ायदे वाला बारीक भेद नहीं है। समग्र रूप, वे गहरी गलतफहमी के स्रोत हैं, उदाहरण के लिए, ध्रुवीकरण को जोर-जुल्म के खिलाफ लड़ाई से लेकर पारिवारिक खानदानों या प्रतिस्पर्धी कंपनियों के बीच प्रतिस्पर्धा, विविधता वाले लोकतंत्र के राजनीतिक दलों के बीच गहन नीतिगत विवाद तक, सब कुछ के समान माना जा सकता है।

तर्क के आधार पर, इनमें से किसी भी उदाहरण को ध्रुवीकरण के रूप में नहीं वर्णित किया जाना चाहिए। फिर भी, हमने अस्पष्टताओं के जिस विस्तार को साथ-साथ बने रहने की अनुमति दी है, और फिर कई योग्य विशेषणों से उन्हें मजबूत बनाता है, वह ऐसी संदिग्ध तुलनाओं को स्वीकार्य बनाता है।

3. एक साझी बेसलाइन की ओर

ध्रुवीकरण की परिभाषा पर पूरी सहमति नहीं बन सकेगी। इस पेपर का सरल उद्देश्य है: शिक्षाविदों और प्रैक्टिशनर के बीच एक अच्छी संरचना वाली बहस को प्रेरित करना, जो समय के साथ, संप्रदायवाद जैसे शब्द की स्पष्टता की ही तरह ही, ध्रुवीकरण की अधिक साझी बेसलाइन समझ हासिल करने में मदद कर सकती है। इस समझ से शुरुआती चेतावनी, रणनीतिक सहयोग, प्रभावी प्रतिक्रिया और प्रभाव मापन हेतु अधिक स्थानीय और वैश्विक क्षमता हासिल होगी।

उस लिहाज से, यह पेपर ध्रुवीकरण की प्रस्तावित परिभाषा पर पहुंचने के लिए हॉलमार्क विधि का इस्तेमाल करता है। इस तकनीक का इस्तेमाल कभी-कभी प्राकृतिक विज्ञानों में किया जाता है, क्योंकि यह असामान्य रूप से मुश्किल विचारों को व्यवस्थित करने और वर्गीकृत किए जा रहे शब्द के रोजमर्रा के इस्तेमालों व अर्थों को शामिल करने में मदद करता है।

इस विधि को लागू करने से पहले, तीन बिंदुओं का जिक्र करना जरूरी है। सबसे पहले, इस पेपर की ध्रुवीकरण की परिभाषा जानबूझकर इस शब्द की कई बौद्धिक उत्पत्तियों बंट जाती है, जो कम से कम प्राचीन यूनान (स्टैसिस की अवधारणा ख़ास तौर से प्रासंगिक है) से तो संबद्ध है ही। बीसवीं शताब्दी के मध्य से ध्रुवीकरण की समाजशास्त्रीय व राजनीतिक अवधारणाएं इस पुराने सिद्धांत की मजबूत प्रतिध्वनि प्रदर्शित करती हैं और समय के साथ सामाजिक

मनोविज्ञान तथा व्यवहार अर्थशास्त्र समेत जानकारी के कई अन्य क्षेत्रों में वर्णित की गई हैं। इसके विपरीत, भौतिकी में ध्रुवीकरण का अर्थ प्रकाश तरंगों के विद्युत सदिश के कंपन पर केंद्रित है, (दिलचस्प रूप से) कम असरदार रहा है।

दूसरा बिंदु ध्रुवीकरण शब्द के व्युत्पत्ति-विज्ञान से जुड़ा है, जिसमें कम से कम दो प्रमुख धारणाएं सम्मिलित हैं: "ध्रुव" (और इस प्रकार दूरी) तथा "ध्रुवीकृत" (और इस प्रकार प्रभाव)। जब समाज व राजनैतिक प्रणालियों की बात आती है, तो ध्रुव की अवधारणा को मुख्य रूप से द्विध्रुवीय शब्दों में समझा और व्यक्त किया जाता है (अर्थात, यह दो ध्रुवों को परिलक्षित करता है, जो साथ मिलकर ध्रुवीयता बनाते हैं)। परिभाषा के आधार पर, ध्रुव तुलनात्मक निकटता के विपरीत तुलनात्मक दूरी का संकेत करते हैं। जहां तक क्रिया ध्रुवीकृत की बात है, तो यह सामान्यतः तीव्रता का संकेत करता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति मन या आत्मा की तटस्थ या उदासीन अवस्था का वर्णन करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल कभी नहीं करेगा (जैसे कि एक ध्रुवीकृत मतदाता एक शांत मतदाता नहीं है)। अंत में, जब शब्द संयोजित होते हैं, तो बिखराव की गतिशीलता तार्किक रूप से लागू होती है। ध्रुविकरण के भीतर ध्रुव मौजूद रहता है, जिससे उत्तेजित करने वाली अनुक्रियाएं ध्रुवों के बीच की दूरी को बढ़ाती हैं, न कि कम करतीं हैं।

तीसरा बिंदु पर्यायवाची शब्दों की विशेषता है और यह उनसे लिए जा सकने वाले निष्कर्षों से जुड़ा है। उदाहरण के लिए, जब कई समाजों और राजनीतिक प्रणालियों के ध्रुवीकरण का वर्णन किया जाता है, तो संघर्ष, विभाजन, जनजीतयतावाद, संप्रदायवाद, उग्रवाद और कट्टरपंथ जैसे शब्द सबसे अधिक प्रयोग किए जाने वाले विकल्प या उपमा होते हैं। ये न तो उदासीन होते हैं और न ही सकारात्मक शब्द हैं; बल्कि वे नकारात्मक परिघटना को इंगित करते हैं। इसके विपरीत, उत्पीड़न, आक्रामकता या अत्याचार जैसे शब्द – जो उसी प्रकार नकारात्मक घटनाओं को इंगित करते हैं, पर जो अधिक लंबवत और असममित गतिशीलता से संबद्ध होते हैं – शायद ही उनका कभी ध्रुवीकरण के पर्यायवाची के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसी प्रकार, प्रतिस्पर्धा, असहमति और प्रतिद्वंद्विता जैसे शब्द – जिनमें अधिक क्षैतिज और सममित गतिशीलता मौजूद है मगर ये कम गंभीरता या खतरा प्रकट करते हैं – शायद ही कभी ध्रुवीकरण जैसे माने जाते हैं। ये शब्द चयन इस बात का परिचायक है कि ध्रुवीकरण को व्यापक रूप से कैसे समझा जाता है।

4. एक प्रस्तावित परिभाषा

विवाद भड़कने का खतरा तो है, मगर अच्छी संरचना वाली बहस को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, यह पेपर ध्रुवीकरण की नीचे दी गई परिभाषा प्रस्तुत करता है:

> **ध्रुवीकरण:** एक मुख्य वभिाजन या संघर्ष जो कसिी समाज या राजनीतकि व्यवस्था में बड़े समूहों के बीच पैदा होता है और जो दो सुदूर और वरिोधी ध्रुवों पर वचिारों तथा मान्यताओं के समूहन और कट्टरपंथ के रूप में चह्निति होता है।

यह प्रस्तावित परिभाषा ध्रुवीकरण के आठ हॉलमार्क्स पर आधारित है, जिन्हें एक-दूसरे से संयुक्त संपूर्ण रूप में पढ़ा जाना चाहिए, जिसमें एक हॉलमार्क में बदलाव से संभावित रूप से दूसरे में बदलाव हो सकता है।

दूरी

यह हॉलमार्क ध्रुवों की मूल अवधारणा से आता है और व्यापक उपयोग में दिखाई पड़ता है। अपनी प्रकृति के अनुसार, ध्रुव एक दूसरे से पर्याप्त दूरी पर विद्यमान रहते हैं, चाहे वह दूरी भौतिक हो, वैचारिक अथवा भावनात्मक हो। ध्रुवों को निकटता के अभाव से पहचाना जाता है।

बाइनरी

कट्टरपंथ, उग्रवाद, संप्रदायवाद या जनजातियतावाद के विपरीत, ध्रुवीकरण को सामान्यतः दो ध्रुवों या चरम बिंदुओं के मध्य एक बाइनरी संबंध के रूप में समझा जाता है। जब संघर्षों में अधिक पक्ष लिप्त होते हैं – जो एक असामान्य यथार्थ नहीं है – तो एक अलग शब्द की जरूरत होती है (जैसे कि, विभाजन, दरार, संघर्ष), न कि एक नया योग्य विशेषण।

महत्वपूर्ण समूह

अपनी प्रकृति के आधार पर ध्रुव, चुंबक या धुरी के दो सिरे की तरह ही एक-दूसरे के साथ किसी प्रकार की साम्यता में विद्यमान रहते हैं। पूर्व में, इसमें ऐसी स्थिति का वर्णन करने के लिए ध्रुवीकरण शब्द का इस्तेमाल शामिल नहीं है, जिसमें मध्य की भूमि ध्रुवों से बड़ी होती है। ध्रुवीकरण के लेबल का केवल तभी मायने निकलता है, जब वास्तव में या धारणा के तौर पर, हरेक ध्रुव पर एक महत्वपूर्ण समूह और बीच में एक छोटा समूह होता है।

अपकेंद्री

इस हॉलमार्क का व्यापक इस्तेमाल किया जाता है, और मूल शब्द "ध्रुवीकृत" और "ध्रुव" के विच्छेदन से यह तार्किक रूप से भी बाहर आता है। विभिन्न ध्रुवों पर ध्रुवीकृत लोग विरोधी ध्रुव की ओर नहीं, बल्कि उससे दूर जाने की प्रवृत्ति रखते हैं। पारस्परिक मान्यता हासिल करने के तरीके खोजना, विनाशकारी प्रतिक्रिया फंदों से बचना, और उस चीज का विस्तार करना जिसे वार्ताकार "संभावित समझौते का क्षेत्र" कहते हैं, ध्रुवीकरण की अंतर्निहित चुनौतियां हैं।

क्षैतिज

मूलरूप से ध्रुवीकरण संबंध से जुड़ी समस्या है, जिसमें, संरचनात्मक रूप से, गतिशीलता लंबवत के मुकाबले ज्यादा क्षैतिज होती है। इस प्रकार, समाधानों को एकतरफा आक्रमण के से आत्मरक्षा की बजाय रिश्ते को दुरुस्त करने के लिए अधिक तैयार किए जाते हैं, उदाहरण के लिए, जर्मनी का नाज़ीवाद या दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद। ध्रुवीकरण ‹डेविड और गोलियथ› की कहानी नहीं है; यह तुलनात्मक रूप से बड़े आकार के समूहों (चाहे शक्ति, संख्या या प्रभाव में हो) के बीच संघर्ष की कहानी है।

नश्वर

अपकेंद्री हॉलमार्क (जो आंदोलनकी एक अवधारणा है) का एक नतीजा यह है कि ध्रुवीकरण एक ऐसी अवस्था है जिसमें प्रवेश किया जा सकता है और जिससे बाहर भी निकला जा सकता है। इसके पीछे का तर्क यह है कि, एक बार जब ध्रुवों के बीच की गति काफी लंबे समय तक अभिकेंद्री हो जाती है, तो ध्रुवीकरण का लेबल असमर्थन योग्य बन जाता है। यही तर्क मूल शब्द "ध्रुवों" पर भी लागू होता है: एक बार जब मध्य का हिस्सा सिरों से बड़ा हो जाता है, तो ध्रुवों और इस प्रकार ध्रुवीकरण के बारे में बात करना तर्कसंगत नहीं रह जाता है।

खतरा

हर तीखे विवाद को ध्रुवीकरण के लेबल तक सीमित नहीं किया जा सकता। एफसी बार्सिलोना वर्सेस रियल मैड्रिड ध्रुवीकरण की स्थिति नहीं है; उनके प्रशंसक केवल प्रतिद्वंद्विता के प्रतिभागी हैं। कार बनाम पैदल यात्री ध्रुवीकरण की कहानी नहीं है; उनके वकील नीतिगत विवाद के बिल्कुल विपरीत ओर हैं। ध्रुवीकरण, समाज या राजनैतिक व्यवस्था की स्थिरता के कथित खतरों से जुड़े बड़े सवालों के चारों ओर उत्पन्न होता है। इससे कम किसी भी चीज़ के लिए, इस्तेमाल हेतु बेहतर शब्द हैं।

अलग समझना

यह हॉलमार्क कई दूसरे हॉलमार्क का तार्किक नतीजा है और जनजातीयतावाद एवं संप्रदायवाद जैसी घटनाओं तथा क्रमशः जनजातियों और संप्रदायों के बीच विरोध पर बल देने के साथ प्रत्यक्ष रूप से आच्छादित होता है। ध्रुवीकरण के साथ, भी इससे अलग नहीं है। ध्रुवीकरण की स्थिति में प्रभाव आम बात है। दृष्टिकोण में कट्टरपंथ आ जाता है, जटिलता कम हो जाती है, निष्ठा विचारों के ऊपर हावी हो जाती है और इन-ग्रुप रोमांसवाद और आउट-ग्रुप का दानवीकरण का संयोजन प्रचलित हो जाता है।

धुरुवीकरण के आठ हॉलमार्क्स

1. दूरी
2. बाइनरी
3. महत्वपूर्ण समूह
4. अपकेंद्री
5. क्षैतिज
6. नश्वर
7. खतरा
8. अलग **समझना**

जैसा कि पहले बताया गया है, इस परिभाषा का उद्देश्य चर्चा को बंद करना नहीं है, बल्कि ध्रुवीकरण क्या है और क्या नहीं है, इस बारे में हमारी सामूहिक समझ के बारे में अधिक संरचनापूर्ण विचार-विमर्श को उत्प्रेरित करना है। उस प्रक्रिया के लिए समय की जरूरत होगी, साथ ही योग्य विशेषणों के वर्णित ज्यादा संख्या की गणना भी करनी होगी।

अंत में, ध्रुवीकरण के बारे में उसी साफ तरीके से बोलना संभव हो जाना चाहिए, जिस तरह से कोई व्यक्ति सांप्रदायिकता के बारे में बोलता है, जिसके लिए योग्य विशेषणों का विस्तार व संख्या अल्प और कम है क्योंकि बेसलाइन परिभाषा तय की जा चुकी है। अंत में, जो उभरना चाहिए वह एक वैचारिक सीमा नहीं है, जो ध्रुवीकरण को समझने के तरीके की बारीकियों और लचक्ता को खत्म करती है, पर एक वैचारिक मंजिल है जो अधिक सटीकता को सक्षम बनाती है।

भाग दो: ध्रुवीकरण समाधान स्पेक्ट्रम

इस पर्चे का दूसरा भाग समाजों एवं राजनैतिक प्रणालियों में ध्रुवीकरण की समस्या के तीन-भाग वाले समाधान स्पेक्ट्रम को प्रस्तुत करता है। इसमें ऐसी विवेचनाएं शामिल होते हैं, जो पिछले विश्लेषण में उठाए गए कुछ वैचारिक एवं व्यावहारिक प्रश्नों तक पहुंचती हैं। समय के साथ, इस समाधान स्पेक्ट्रम के शुरुआती संस्करण को ध्रुवीकरण के परिभाषित लक्षणों क संबंध में अधिक सहमति के विकास के साथ लॉकस्टेप में परिष्कृत और परिवर्धित किया जा सकता है।

1. संदर्भ मूल्यांकन

किसी भी सामाजिक या राजनैतिक समस्या के समाधान की रचनात्मक परिचर्चा, बल्कि ख़ासतौर से ध्रुवीकरण जैसी जटिल समस्या कके संदर्भ में तब अधिक संभावित होती है, जब खुद समस्या की प्रकृति के बारे में ही न्यूनतम सहमति मौजूद हो। उस दिशा में, इस परिघटना की व्यापक साझा समझ अहम होती है। यह निर्धारित करने के लिए कि लेबल फिट बैठता है या नहीं, व्यक्ति को हमेशा जमीनी सच्चाइयों पर नज़र डालनी चाहिए।

यह कार्य अकादमिक प्रयास के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। किसी भी अच्छी रणनीति के निर्माण के लिए एक सही परिस्थितिगत निदान एक पूर्व शर्त है।

उदाहरण के लिए, एक निदान जो "अंदर" के कर्ताओं, नेटवर्क, ज्ञान एवं नेतृत्व की बजाय "बाहर" पर बहुत ज्यादा निर्भर करता है, उसका लक्ष्य चूक जाना लगभग तय है। बाहर से जो ध्रुवीकरण जैसा दिख सकता है, अंदर से पड़ताल करने- और अनुभव करने पर- बहुत अलग दिख सकता है।

हालांकि, हमेशा की तरह, परेशानी विवरण में मौजूद है। यदि स्थिति विश्लेषण स्पष्ट रूप से त्रुटिपूर्ण हो, तो परिभाषाएं, मैनुअल, टूलबॉक्स और चेकलिस्ट आखिरकार कोई अहमियत नहीं रखते हैं। इसमें मुख्य संदर्भ-विशिष्ट कारणों, कर्ताओं, चालकों, संचालकों व लक्षणों तथा ध्रुवीकरण के नतीजों के बारे में सटीकता शामिल है। गुणवत्ता मूल्यांकन – जितनी बार जरूरी हो अपडेट किया जाना – अपरिहार्य है।

2. समाधान स्पेक्ट्रम की मॉडलिंग

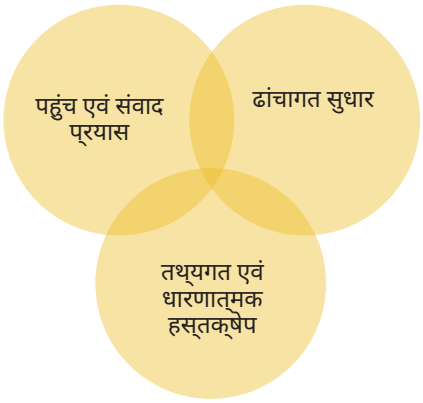

ध्रुवीकरण पर होने वाली वैश्विक पहल के जरिए, विश्व स्तर पर, उन सभी बड़े संगठनों व परियोजनाओं का पता लगाने का प्रयास किया गया, जिनका ध्रुवीकरण को रोकने या उससे मुकाबला करने की स्पष्ट मंशा थी। इस कार्य से एक स्पष्ट चित्र उभरकर सामने आया। प्रयास की गई ज्यादातर रणनीतियां और समाधान तीन श्रेणियों में आते हैं, जिन्हें नीचे वेन आरेख में प्रदर्शित किया गया है। ध्रुवीकरण पर कुछ हालिया साहित्य में समरूपी वितरण पाए जाते हैं।

ध्रुवीकरण के हॉलमार्क्स को देखते हुए, वेन आरेख में सबसे कम हैरानी वाली श्रेणी "पहुंच व संवाद प्रयास" है। जब बड़े समूहों के बीच संघर्ष का खतरा हो या वास्तव में हो, जो विरोधी ध्रुवों पर विचारों व विश्वासों के समूह द्वारा चिह्नित होता है, तो ध्रुवीकरण को रोकने या कम करने की मांग करने वालों के लिए संवाद एक जायज टूल होता है। यह शांति लाने का प्रयास करने वालों की प्रतिक्रिया के समान है और, इस प्रकार, ज्यादातर विधियां व रणनीतियां शांति लाने और संघर्ष का समाधान खोजने के क्षेत्रों से संबंधित होती हैं।

दूसरी श्रेणी, "तथ्य एवं अवधारणात्मक हस्तक्षेप", भी ध्रुवीकरण के हॉलमार्क्स से मेल खाती है। जब बड़े पैमाने पर नज़रिये में कट्टरता और भिन्नता होती है, तो यह तर्कसंगत है कि तथ्यात्मक स्पष्टीकरण और नैरेटिव बदलव को समाधान के आवश्यक अंगों के रूप में समझा जाता है। यह सच्चाई और सुलह की प्रतिक्रिया है और इस तरह, कई रणनीतियां संक्रमणकालीन न्याय के क्षेत्र का स्मरण दिलाती हैं।

तीसरी श्रेणी ज्यादा व्यापक है, जिसका संबंध उस परिवेश में बदलाव से है, जिसमें ध्रुवीकरण वृद्धि करता है या कम हो जाता है: "संरचनात्मक सुधार"। इसके पीछे का विचार यह है कि ध्रुवीकरण मनमाने तरीके से पैदा नहीं होता है, बल्कि ऐसे परिवेश में की गई कार्रवाइयों के कारण पैदा होता है, जो कुछ प्रकार के व्यवहार के लिए बढ़ावा और निरुत्साहन का मिश्रण प्रस्तुत करते हैं। कुछ चर कड़ी व धीमी गति से बदलने वाले होंगे (जैसे, भूगोल, जनसांख्यिकी, राजनैतिक संस्कृति, साक्षरता स्तर) जबकि दूसरे चर तुलनात्मक रूप से अधिक लचीले होंगे (जैसे, संस्थाए, कानून व नीतियां)। दोनों प्रकार के चरों में बदलाव से प्रमुख कर्ताओं के बीच व्यवहार में परिवर्तन आएगा – उदाहरण के लिए, उन्हें अधिक या कम सहयोग तथा और सहिष्णुता की ओर भेजना।

कुछ और अध्ययन भी अपेक्षित हैं। सबसे पहले, वेन आरेख का चुनाव इस तथ्य के कारण होता है कि तीन समाधान श्रेणियां कभी-कभी एक दूसरे पर आच्छादित हो जाती हैं। जैसे कि, एक संवाद प्रक्रिया का उद्देश्य उस नैरेटिव तस्वीर को बदलना हो सकता है, जो एक जरूरी ढांचागत सुधार में बाधा बन रहा हो। श्रेणियां परस्पर रूप से सुदृढ़ हो सकती हैं।

दूसरा, एक क्रॉस-कटिंग धारणा तीन श्रेणियों को जोड़ती है, अर्थात्, सफल हस्तक्षेप के लिए गठबंधन का गठन, राजनैतिक विश्लेषण, रणनीति निर्माण व उद्देश्यपूर्ण संगठन के अन्य रूपों की जरूरत होती है। यद्यपि इनमें से कोई भी अपने स्वरूप में एक समाधान श्रेणी नहीं है, प्रत्येक तीन समाधान श्रेणियों में बड़े पैमाने पर सफलता के लिए एक अहम क्रियाविधि संबद्ध घटक हो सकता है।

तीसरा, ऊपर प्रस्तुत समाधान स्पेक्ट्रम न तो व्यापक है और न ही सलाहकारी है (उदाहरण के लिए, धर्म एवं खेल का इस्तेमाल ध्रुवीकरण को कम करने के लक्षित तरीकों से किया जा सकता है)। इसकी बजाय, इसका अर्थ ध्रुवीकरण पर हुई वैश्विक पहल के जरिए पहचाने गए संगठनों और परियोजनाओं की गतिविधि की मुख्य एकाग्रता का वर्णन करने का एक तरीका है, जो साफ तौर से और जानबूझकर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में ध्रुवीकरण के दिशा में कार्य कर रहे हैं।

अंतिम तथ्य यह है कि ध्रुवीकरण से जुड़ी कुछ कार्रवाइयां, कई वजहों से, लेबल को हटा सकती हैं। उदाहरण के लिए, एक दबंग नेता का विरोध करने के लिए, जिसने खुलेआम जातीय, राजनीतिक या धार्मिक ध्रुवीकरण की स्थिति को बढ़ावा दिया हो, ध्रुवीकरण का मुकाबला करने के बैनर तले एक व्यापक सामाजिक अभियान नहीं चलाया जा सकता

है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि सामान्यतः ऐसे मामलों में सर्वोच्च लक्ष्य और संगत फ्रेमिंग ध्रुवीकरण को रोकना नहीं, बल्कि एक खलनायक को रोकना है। यद्यपि उस लक्ष्य को हासिल करने से ध्रुवीकरण को कम करने में मदद मिल सकती है, पर यह प्राथमिक इरादे के बजाय एक माध्यमिक प्रभाव है।

3. हस्तक्षेप डिजाइन के प्रश्न

संदर्भ मूल्यांकन के महत्व पर जोर दिया गया है और तीन-भाग वाला समाधान स्पेक्ट्रम प्रस्तुत किया गया है। यह सेक्शन हस्तक्षेप डिजाइन पर शुरुआती स्थितियों के प्रभाव को देखकर दोनों को संयोजित करता है।

कम से कम दो मूल नियमों का उल्लेख किया जाना चाहिए। सबसे पहले, **ध्रुवीकरण जितना अधिक गंभीर होगा**, संरचनात्मक सुधारों के लिए उतनी ही कम गुंजाइश होगी (क्योंकि क्रॉस-ग्रुप गठबंधन बनाना कठिन होता है), कम प्रभाव वाले वैकल्पिक नैरेटिव्स एवं निष्पक्ष तथ्य-खोज नतीजी (क्योंकि विचारों व विश्वासों के कट्टरपंथीकरण और सरलीकरण ने पहले से ही लोगों के दिमाग को कुंद कर दिया है), और संवाद के लिए समूह में फोकस उतना ही अधिक जरूरी हो जाता है (क्योंकि दूसरी तरफ कोई ग्रहणशील आउट-ग्रुप नहीं है)। दूसरा, **राजनैतिक व्यवस्था जितनी अधिक सत्तावादी होगी**, क्रॉस-ग्रुप गठबंधन की उतनी ही ज्यादा आवश्यकता होती है (उदाहरण के लिए, लोकतांत्रिक रूप से अधिनियमित संरचनात्मक सुधारों की वकालत करना) मगर आउट ग्रुप भरोसा निर्माण के लिए (उदाहरण के लिए, दमन के कारण) अथवा स्वतंत्र रिपोर्टिंग एवं एकीकृत नैरेटिव के लिए (उदाहरण के लिए, सेंसरशिप और मीडिया पर देश के नियंत्रण की वजह से) राजनीतिक स्थान उतना ही कम होता है।

ऐसे स्वाभाविक है कि किसी भी रणनीतिक प्रतिक्रिया को विकसित करने से पहले कई अन्य प्रारंभिक स्थितियों का मूल्यांकन कर लिया जाना चाहिए। कौन ध्रुवीकृत है और क्यों है, और ध्रुवीकरण को रोकने या कम करने के अवसर की किसी भी परिस्थिति को लेकर (उदाहरण के लिए, बाहरी झटके या शांति वार्ता या राजनीतिक संक्रमण की शुरुआत) इनमें बुनियादी प्रश्न शामिल होते हैं। मगर जब एक मजबूत और स्थानीय संचालन वाला निदान तैयार हो जाता है, तो पांच प्रकार के संयोजन किए जाने योग्य चर, हस्तक्षेप डिजाइन को उपयोगी रूप से वर्णित कर सकते हैं:

पांच हस्तक्षेप च

1. इन-ग्रुप बनाम आउट-ग्रुप **फ़ोकस**
2. सहयोगात्मक बनाम टकराव वाला **दृष्टिकोण**
3. अल्पकालिक बनाम दीर्घकालिक **लक्ष्य**
4. माइक्रो बनाम मेसो बनाम मैक्रो **स्केल**
5. स्थानीय बनाम राष्ट्रीय बनाम क्षेत्रीय बनाम वैश्विक **प्रयोजन**

पहुंच एवं संवाद प्रयासों की श्रेणी में हस्तक्षेप डिजाइन इन पांच चरों को कई तरीकों से ध्यान में रख सकता है। उदाहरण के लिए:

- समूह के भीतर के हस्तक्षेप में समूह की राय को कट्टरपंथी बनाने में मदद करने के लिए अंदर के प्रभावशाली लोगों तक पहुंच बनाई जा सकती है, जबकि समूह के बाहर के हस्तक्षेप में बाहरी नरमपंथियों तक गोपनीय पहुंच बनाई जा सकती है;
- एक सहयोगात्मक नजरिए से एकतरफा विश्वास-बहाली के उपाय सम्मिलित हो सकते हैं, जबकि एक टकराव वाले दृष्टिकोण में जारी वार्ता को बिगाड़ने वालों की सार्वजनिक आलोचना की जा सकती है;
- औपचारिक बातचीत के डिजाइन पर सहमत होना एक अल्पकालिक उद्देश्य हो सकता है, वहीं एक व्यवहार्य अंतिम समझौते तक पहुंचना एक दीर्घकालिक लक्ष्य हो सकता है;
- माइक्रो-स्तर का हस्तक्षेप एक सीमित युद्धविराम पर ध्यान दे सकता है, जबकि एक मेसो या मैक्रो हस्तक्षेप ध्रुवीकरण के कुछ मूल कारणों को हल करने के लिए बातचीत का इस्तेमाल करने का प्रयास कर सकता है; और

- भौगोलिक दायरे के संदर्भ में, साझा सीमाओं वाले और विविध-राष्ट्रीय जनसंख्याओं वाले देशों के बीच अंतर-राज्यीय सशस्त्र संघर्ष के बाद ध्रुवीकरण को कम करने के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं वैश्विक संवाद पथ की एक व्यापक श्रृंखला की जरूरत पड़ सकती है।

तथ्य और नैरेटिव हस्तक्षेप के संबंध में:

- एक इन-ग्रुप फ़ोकस में विभाजनकारी नैरेटिव को बदलने या सोशल मीडिया इको चैंबर्स को बाधित करने के प्रयास किए जा सकते हैं, जबकि एक आउट-ग्रुप फ़ोकस विवादित इतिहास के अनुभवजन्य स्पष्टीकरण की ओर बढ़ सकता है;
- एक सहकारी दृष्टिकोण में "वैकल्पिक भविष्य" के प्रयास किए जा सकते हैं, जबकि टकराव वाले दृष्टिकोण में गलत सूचना/सूचना-विहीनता से निपटने के लिए मुकदमेबाजी का सहारा लिया जा सकता है;
- पत्रकारों एवं न्यायाधीशों को छुपे हुए बायस का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित करना अल्पकालिक उद्देश्य हो सकता है, वहीं किसी नुकसानदेह नैरटिव परिस्थिति को बदलना एक दीर्घकालिक उद्देश्य हो सकता है;
- माइक्रो हस्तक्षेप (micro intervention) सार्वजनिक विवाद के मुद्दे पर एक पब्लिक पोल का रूप अख्तियार कर सकता है, जबकि एक मेसो या मैक्रो हस्तक्षेप में "झूठ की स्वीकृत सीमा को संकरा करने" के लिए एक सत्य और समझौता आयोग की स्थापना की जा सकती है या शांतिपूर्ण सामाजिक मानदंडों को बढ़ावा देने के लिए फिल्मों की एक श्रृंखला का निर्माण किया जा सकता है; और
- भौगोलिक दायरे के लिहाज से, गहराई से स्थापित किए नैरेटिव्स व मानदंडों पर काम करने के लिए, उदाहरण के लिए अरब वर्ल्ड में इस्लामी और धर्मनिरपेक्षतावादी विभाजन के ऊपर स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय उपायों के संयोजन की जरूरत पड़ सकती है।

ढांचागत सुधारोंके संबंध में:

- इन-ग्रुप फ़ोकस में एकल राजनैतिक पार्टी का आंतरिक लोकतंत्रीकरण शामिल हो सकता है, जबकि आउट-ग्रुप फ़ोकस में क्रॉस-पार्टिजनशिप को बढ़ावा देने के लिए नियम में बदलाव किए जा सकते हैं;
- अगर ध्रुवीकरण से सख्ति से निपटना है तो उसको बढ़ावा देने वाले संपत्ति कानूनों को बदलने के लिए मध्यस्थता का सहारा लिया जा सकती है, जबकि सहकारी दृष्टिकोण में एक ग्रिडलॉक नीति मुद्दे से निपटने के लिए नागरिकों की सभा का गठन किया जा सकता है;
- एक अल्पकालिक लक्ष्य में दुर्व्यवहार किए गए और गरीब अल्पसंख्यक समूह के लिए अस्थायी राजकोषीय मदद दी जा सकती है, जबकि दीर्घकालिक लक्ष्य में गहरी जड़ें जमा चुकी क्षैतिज असमानताओं के निवारण के लिए नीतियों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है या "विजेता ही सब कुछ है" वाली राजनीतिक संस्कृतियों को बदला जा सकता है;
- सूक्ष्म हस्तक्षेप किसी संस्था के अंतर की भेदभावपूर्ण नियुक्ति नीतियों को बदलने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है, जबकि एक मेसो या मैक्रो हस्तक्षेप सार्वजनिक सेवा व निजी क्षेत्र के बड़े हिस्से तक अपना प्रसार कर सकता है; और
- एक स्थानीय सुधार में क्रॉस-ग्रुप नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए शहर के स्तर पर भागीदारीपूर्ण लोकतंत्र उपायों को देखा जा सकता है, जबकि राष्ट्रीय, क्षेत्रीय या वैश्विक सुधार प्रयासों में सोशल मीडिया व आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के नियंत्रण से लेकर भ्रष्टाचार की समस्याओं या शिकायत के स्रोत के रूप में दण्ड से मुक्ति जैसी किसी भी समस्या का समाधान को अंजाम दिया जा सकता है।

स्वाभाविक तौर से, ये उदाहरण केवल उस सतह को अपरदित करते हैं, जिन्हें परीक्षण व अनुकूलित किए जाने योग्य रणनीतियों के भविष्य के व्यापक वैश्विक टूलबॉक्स में शामिल किया जा सकता है। यद्यपि, ऐसा होने के लिए, ध्रुवीकरण के परिभाषित लक्षणों पर आधारभूत सहमति की अत्यधिक कमी को अंततः दूर किया जाना चाहिए।

दशकों पहले, संघर्ष समाधान के क्षेत्र में भी यही सीमा मौजूद थी, जब निदान साधन सीमित थे, प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियां अल्पविकसित थीं, प्रतिक्रिया रणनीतियां अनौपचारिक थीं और सफलता के उपाय गुप्त हुआ करते थे। इसके विपरीत, आज, शिक्षाविदों और प्रैक्टिशनरों के बीच संघर्ष-समाधान के बुनियादी सिद्धांतों को लेकर व्यापक सहमति है, भले ही इसके सटीक पैरामीटर चर्चा एवं विकास के लिए खुले हों।

ध्रुवीकरण के साथ, बुनियादी सवालों के बारे में अस्पष्टताओं की निरंतर श्रृंखला व्यवहार व अवधारणा में एक प्रकार की अव्यवस्था पैदा कर रही है, सर्कलों में बातचीत अक्सर की जा रही है, जो अधिक सहयोग करने और वैश्विक सबक हासिल करने की बजाय हमें दूर ले जा रही है। वे समाज और राजनैतिक प्रणालियं पराजित हैं, जिनमें ध्रुवीकरण अपने आप को स्थापित कर लेता है और अपने संग कट्टरपंथ, संघर्ष, अलगाव और विभाजन का संयोजन लेकर आता है।

भाग तीन: ध्रुवीकरण के एक क्षेत्र की कल्पना

पर्चे का यह तीसरा भाग संक्षेप में बताता है कि ध्रुवीकरण के "क्षेत्र" को उभरते हुए- बेहतर और बदतर के लिए देखने का क्या आशय हो सकता है।

पहला अध्ययन यह है कि दुनिया भर के बड़े विश्वविद्यालय अध्ययन के दर्जनों क्षेत्रों में – मानव विज्ञान से लेकर पत्रकारिता, संघर्ष, पर्यावरण विज्ञान, संगीत और शहरी नियोजन तक सब कुछ में डिप्लोमा प्रदान करते हैं। ध्रुवीकरण (अभी तक) उस सूची में नहीं आया है।

दूसरा, ये क्षेत्र केवल अध्ययन के क्षेत्रों से कहीं अधिक हैं। वे कर्ताओं के "मार्केट्स" के रूप में भी काम करते हैं, जो ध्यान देने, संसाधनों इत्यादि के लिए वैकल्पिक रूप से सहयोग करते या प्रतिस्पर्धा करते हैं।

तीसरा, परिपक्व क्षेत्रों में जहां एक बड़ा तीसरा क्षेत्र पैदा हुआ है, परिचालनों व समाधानों के नियंत्रित अनुप्रयोग पर अधिक समय खर्च किया जाता है, और तुलनात्मक रूप मूलभूत मुद्दे पर बहस के लिए कम खर्च किया जाता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, जो समाधान सभी अधिकारक्षेत्रों में सबसे कारगर सिद्ध होते हैं, वे अक्सर क्षेत्र की स्वीकृत और हस्तांतर किए जाने योग्य जानकारी का हिस्सा बन जाते हैं।

फिर भी, परिपक्व व भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों के साथ नौकरशाही की प्रतिक्रियएं भी हो सकती हैं, जिनमें फार्मूलाबद्ध समाधान प्रभावी हो जाते हैं; कर्ता क्षेत्रीय बन जाते हैं; एजेंडा अधिक दाता-संचालित हो जाते हैं; बौद्धिक पूछताछ दबा दी जाती है; दुहराने से पाठ बासी हो जाते हैं; और साइलो का निर्माण होता है, जो क्रॉस-सेक्टर लर्निंग, समन्वय तथा अन्य क्षेत्रों के साथ एकीकरण को कम करते हैं।

किसी भी वैश्विक अर्थ में न तो ध्रुवीकरण और न ही विध्रुवीकरण का कोई क्षेत्र है, इस प्रकार ये प्रतिक्रियाएं अब तक व्यापक रूप से मौजूद नहीं हैं। फिर भी, यह लाभ अवधारणाओं, बहसों, रणनीतियों और गठबंधन निर्माण में सटीकता, क्रम और ढांचे की कीमत पर आया है, जिसके साथ क्षेत्र निर्माण और विकास भी आता है। इस प्रकार, इसकी खूबियों और खामियों की भी तुकना करनी चाहिए, ख़ासतौर से उन कर्ताओं द्वारा जिनके पास जानबूझकर वैश्विक स्तर के क्षेत्र निर्माण में निवेश करने की क्षमता और दिलचस्पी होती है।

ध्रुवीकरण के मामले में, विचार करने लायक एक और मुद्दा है: संयुक्त राज्य अमेरिका की विशिष्ट अवधारणा का प्रभुत्व। इसमें कोई शक नहीं कि ध्रुवीकरण के विषय पर शैक्षणिक कार्य और संगठनात्मक गतिविधि की सबसे ज्यादा मात्रा अमेरिका में संपन्न की जा रही है। उदाहरण के लिए, इससे दुनिया के कुछ शीर्ष विद्वानों और थिंक टैंकों के बढ़ते साहित्य का लाभ मिलता है; पर एक विशिष्ट, समयबद्ध और स्थान-विशिष्ट केस को ध्रुवीकरण का सार्वभौमिक रूप माने जाने का खतरा भी निहित है। विश्व स्तर पर अधिक तुलनात्मक कार्य – और अधिक विश्व स्तर पर ढांचागत नेटवर्क, गठबंधन और सम्मेलन – इस प्रकार अधिक महत्वपूर्ण होंगे।

दुनिया भर में सबसे सक्रिय शिक्षाविद और प्रैक्तिशनर यदि ध्रुवीकरण की (अयोग्य) घटना के बारे में एक वृद्धिशील आधारभूत सहमति पर पहुंचते हैं, तो इस बीच, यह एक महत्वपूर्ण कदम होगा, जिसका यह पर्चा समर्थन करता है। उल्लेखनीय बौद्धिक एवं व्यावहारिक लाभ होंगे, जो भविष्य में क्षेत्र निर्माण की किसी भी संभावना से रहित होंगे।

निष्कर्ष

इस परिचर्चा पेपर ने ध्रुवीकरण की हमारी वैश्विक समझ की पुरानी अस्पष्टताओं की एक श्रृंखला की पहचान की है। इसके बदले, इसने ध्रुवीकरण की एक परिभाषा प्रस्तावित की है, जिसका उद्देश्य भविष्य में परिचर्चा के जरिए शिक्षाविदों और प्रैक्टिशनरों के बीच अधिक साझा आधारभूत रेखा की संभावना को आगे बढ़ाना है। प्रचलन में योग्य विशेषणों की अधिकता को धीरे-धीरे कम करना, जिन्होंने स्पष्टता की बजाए अधिक भ्रम पैदा किया है, प्रगति का एक संकेत होगा। अंत में, ध्रुवीकरण के बारे में उसी स्पष्टता के साथ आवाज उठाना संभव होना चाहिए जैसे सांप्रदायिकता के बारे में बोला जाता है।

एक वैश्विक सर्वेक्षण और IFIT के स्वयं के कार्य पर आधारित, इस पेपर ने ध्रुवीकरण के लिए एक सांकेतिक समाधान स्पेक्ट्रम भी प्रस्तुत किया है जो मुख्यत: प्रस्तावित परिभाषा के अनुरूप है। यह स्पेक्ट्रम इस बात पर प्रकाश डालता है कि ध्रुवीकरण की प्रतिक्रियाएं व्यापक पैमाने पर गतिशील हैं और संदर्भ-आधारित हस्तक्षेप डिजाइन के लिए मानदंड मुहैय्या कराती हैं।

तब भी, समाधान केवल उन्हीं लोगों के लिए दिलचस्पी भरा होगा, जो ध्रुवीकरण को एक गंभीर समस्या के रूप में लेते हैं; व समस्या जिसकी कामना किसी भी समाज या राजनैतिक व्यवस्था को नहीं करनी चाहिए। उस मोर्चे पर, बड़ी संख्या में वे लोग संशयवादी बने हुए हैं – जो ध्रुवीकरण को प्राय: महत्वपूर्ण सामाजिक चिंताओं या व्यक्तिगत दुर्भावनापूर्ण कारकों को कमजोर करने या उनसे ध्यान भटकाने के रूप में देखते हैं; कम ताकतवर समूहों पर अस्वीकार्य राजनीतिक समझौते या पूर्व-स्थिति वाली व्यवस्था को मजबूर करने के लिए एक बयानबाजी या बहुसंख्यकवादी बहाने के रूप में लेते हैं; कार्यकर्ताओं को अधिक टकरावपूर्ण या विभाजनकारी रणनीति का इस्तेमाल करने से रोकने के लिए एक शब्द के रूप में देखते हैं; या एक ऐसे मुद्दे के रूप में देखते हैं जिसके वास्तविक खतरों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया हो।

वह संदेह स्वागतयोग्य और समझने लायक है। फिर भी, चूंकि यह संदेह ध्रुवीकरण क्या है की अत्यधिक अलग-अलग समझ पर आधारित हो सकता है, यह पेपर प्रथम सिद्धांतों को अधिक सटीकता के साथ स्पष्ट करने के लिए एक कदम पीछे जाने का आग्रह करता है। ऐसा हो जाने पर, बहुत विविध सत्तावादी, नाजुक और संघर्ष-प्रभावित देशों में IFITके वैश्विक कार्य में जो दृष्टिगोचर है, हम उसे जान सकते हैं: ध्रुवीकरण के सभी रूपों में इससे बचना सबसे अच्छा है। “हमने जल्दी कार्रवाई क्यों नहीं की?” वह बात है जिससे हमें अगली बार बचने की कोशिश करनी चाहिए।

स्वीकारोक्तियां

लेखक उन कई सहयोगियों, साझेदारों और विशेषज्ञों को धन्यवाद देना चाहता है, जिन्होंने ध्रुवीकरण पर वैश्विक पहल के तत्वावधान में पिछले वर्ष IFIT एवं फ़ोर्ड फ़ाउंडेशन द्वारा आयोजित विभिन्न सम्मेलनों, बैठकों और वर्कशॉप में बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किए हैं। इन संसूचित अहम विचार व तर्कों को इस पेपर में आगे बढ़ाया गया है। लेखक इस पेपर के पुराने संस्करणों पर रचनात्मक प्रतिक्रिया हेतु हिलेरी पेनिंगटन, एनामी पॉल, बार्नी एफाको, दाना हबीब, एलेजांद्रा गोंजालेज, जैस्मिना ब्रैंकोविक और मेलानी ग्रीनबर्ग को भी विशेष धन्यवाद व्यक्त करता है।

IFIT के बारे में

वर्ष 2012 में स्थापित, इंस्टीट्यूट फ़ॉर इंटीग्रेटेड ट्रांज़िशन (IFIT) एक स्वतंत्र, अंतरराष्ट्रीय, गैर-सरकारी संस्था है, जो कमजोर एवं संघर्ष-प्रभावित देशों में बातचीत और संक्रमण में शामिल राष्ट्रीय कर्ताओं को अंतर्विषय विश्लेषण वे तकनीकी सहायता मुहैय्या कराती है। IFIT ने अफगानिस्तान, कोलंबिया, अल सल्वाडोर, लीबिया, मैक्सिको, नाइजीरिया, श्रीलंका, सूडान, सीरिया, जाम्बिया, ट्यूनीशिया, यूक्रेन, उज्बेकिस्तान, वेनेजुएला और जम्बिाब्वे समेत अन्य देशों में वार्ताओं और परविर्तन का समर्थन किया है।